डॉ. शोभा अग्रवाल 'चिलबिल'

जल की हर बूंद संरक्षित करें...

पात्र-परिचय

डॉ. सुधर्मा भट्टाचार्य जी : प्रख्यात जल वैज्ञानिक
मिसेज तनेजा : राष्ट्रीय महिला आयोग की अध्यक्ष
राष्ट्रीय महिला आयोग की सदस्याएँ
शची जी
लक्ष्मी जी
आदर्श जी
संगीता जी
सुनीता जी
सुमन जी
प्रद्युम्न श्रीवास्तव : केन्द्रीय भूमि जल बोर्ड के निदेशक
कुछ अन्य स्त्री, पुरुष

(पर्दा खुलता है)

(प्रथम दृश्य)

(स्टेज पर राष्ट्रीय महिला आयोग के कार्यालय का दृश्य है। पीछे पर्दे पर लिखा है-राष्ट्रीय महिला आयोग, नई दिल्ली। बीच की कुर्सी पर अध्यक्ष मिसेज तनेजा बैठी हैं। अन्य कुर्सियों पर कुछ अन्य महिलाएँ बैठी हैं।

अध्यक्ष मिसेज तनेजा : बहनों! आप लोगों को पता ही है कि कल अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर पुरस्कार वितरण के लिए प्रख्यात जल वैज्ञानिक डॉ. सुधर्मा भट्टाचार्य जी को बुलाया गया है।

वह कलकत्ता से आ चुकी हैं, गेस्ट हाउस में हैं, कुछ ही देर में यहाँ आती होंगी।

लक्ष्मी : उनका आना हमारे लिए गौरव की बात है। (एक पुरुष के साथ डॉ. सुधर्मा भट्टाचार्य जी का प्रवेश)

(सब महिलाएँ उठ कर खड़ी हो जाती हैं व हाथ जोड़ कर नमस्ते करती हैं।)

डॉ. भट्टाचार्य : (हाथ जोड़कर) नमस्कार बहनों! (अध्यक्ष उनको कुर्सी पर बैठने का इशारा करती हैं। डॉ. भट्टाचार्य बैठ जाती हैं।)

डॉ. भट्टाचार्य : बहनों! आगामी महिला-दिवस की बधाई।

सब लोग : आपको भी बधाई। (चपरासी पानी लाकर रख देता है।)
(अध्यक्ष मिसेज तनेजा सबका परिचय कराती हैं।)

अध्यक्ष : मैडम् यह सभी लोग राष्ट्रीय महिला आयोग की सदस्या हैं। (हाथ से इशारा करते हुए यह हैं लक्ष्मी जी, शची जी, आदर्श जी, सुमन जी, संगीता जी और सुनीता जी।

डॉ. भट्टाचार्य : (अध्यक्ष की ओर उन्मुख होकर) मिसेज तनेजा! कल महिला दिवस है किन्तु मैं एक दिन पहले विशेष कारण से आई हूँ। आपको मालूम ही होगा कि हमारे देश में भी धरती का भूजल स्तर बहुत गिर गया

है। संयुक्त राष्ट्र विश्व जल विकास रिपोर्ट 2003 के अनुसार भविष्यवाणी है कि 2025 तक भारत का एक बड़ा हिस्सा जल की कमी वाले विश्व के अन्य देशों की तरह जल की नितान्त कमी महसूस करेगा, किन्तु यदि हम अभी भी जागरूक हो जाएँ और जल संरक्षण ठीक प्रकार से करें तो हम भविष्य में आने वाली इस आपदा से बच सकते हैं।

शची : मैडम! इसके लिए हम क्या कर सकते हैं?

डॉ. भट्टाचार्य : शची जी! जल संरक्षण की बात करने से पहले तो हम यह समझ लें कि समाज-निर्माण में महिलाओं का योगदान उल्लेखनीय है। चाहे स्वतंत्रता की लड़ाई रही हो या अन्य कोई सुधारात्मक आन्दोलन। एक ओर तो महिलाओं ने स्वयं बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया; दूसरा अपने घर के सदस्यों को प्रेरणा दी।

एक अंग्रेजी कहावत है न When you educate a man you educate only one person, when you educate a woman you educate whole family. (सब तालियाँ बजाती हैं।)

डॉ. भट्टाचार्य : बहनों! हम अपनी शक्ति पहचानें और जल-संरक्षण के इस यज्ञ में अपना योगदान दें। इसके लिए हमें जल-संसाधन की पूरी संरचना को समझना होगा।

लक्ष्मी : (अध्यक्ष की ओर उन्मुख होकर) मैडम! अच्छा हो कि हम लोग अपनी अन्य सदस्याओं तथा केन्द्रीय भूमि जल-बोर्ड के सदस्यों को भी बुला लें, ताकि जल-संरक्षण के लिए एक रणनीति तैयार की जा सके।

अध्यक्ष : ठीक कहती हैं लक्ष्मी जी! (डॉ. भट्टाचार्य जी की ओर उन्मुख होकर) मैडम! आज शाम को समय दे सकेंगी क्या?

डॉ. भट्टाचार्य : हाँ, हाँ, क्यों नहीं! मेरा तो पूरा जीवन ही जल-संरक्षण के लिए समर्पित है। यह तो मेरे लिए खुशी की बात होगी कि राष्ट्रीय महिला आयोग और केन्द्रीय भूमि जल बोर्ड दोनों के ही सदस्य होंगे। तब हमारी रणनीति कार्यरूप में परिणित होने में बहुत सुविधा हो सकेगी।

अध्यक्ष : शाम को चार बजे का समय रख लें।

डॉ. भट्टाचार्य : ठीक है।

अध्यक्ष : आदर्श जी! समय कम है, अतः मैं सोचती हूँ कि सबको मेल तो कर ही दिया जाए, फोन द्वारा भी सूचना दे दें। हम लोग पहले आगन्तुकों की लिस्ट तैयार कर लें।

डॉ. भट्टाचार्य : (उठते हुए) ठीक है, मैं चलती हूँ। इस मध्य कुछ अन्य लोगों को भी जागरूक कर दूँ। शाम को कार्यक्रम यहीं पर होगा?

अध्यक्ष : (उठते हुए) जी हाँ! यहीं पर होगा। (अन्य सदस्याएँ भी उठ कर खड़ी होती हैं व हाथ जोड़कर अभिवादन करती हैं। अध्यक्ष डॉ. भट्टाचार्य को बाहर छोड़ने जाती हैं।)

पट् परिवर्तन

(दूसरा दृश्य)

(राष्ट्रीय महिला आयोग का कार्यालय है। एक माइक लगा है। मंच के एक ओर डॉ. भट्टाचार्य जी, महिला आयोग की अध्यक्ष मिसेज तनेजा जी तथा केन्द्रीय भूमि जल बोर्ड के निदेशक श्री प्रद्युम्न श्रीवास्तव जी बैठे हैं। सामने बहुत सी कुर्सियाँ लगी हैं, उस पर कई स्त्री-पुरूष बैठे हैं।)

अध्यक्ष मिसेज तनेजा : (माइक पर) हमारा सौभाग्य है कि आज हमारे बीच प्रख्यात भूजल वैज्ञानिक डॉ. भट्टाचार्य जी उपस्थित हैं। केन्द्रीय भूमि जल बोर्ड के निदेशक व सदस्य भी उपस्थित हैं।

हम जल-संकट से उबरें तथा जल-संरक्षण की तकनीकों को समझ कर उसमें योगदान दें। यही इस बैठक का उद्देश्य है। आप लोगों से निवेदन है कि आप लोग डॉ. भट्टाचार्य जी के सम्भाषण के दौरान बराबर प्रश्नोत्तर तथा वार्तालाप करते रहें, ताकि समाधान भी हो सके व निष्कर्ष पर पहुँचा जा सके।

जल की एक-एक बूंद बचाएं

(डॉ. भट्टाचार्य जी माइक पर आती हैं। सब लोग तालियाँ बजाते हैं।)

डॉ. भट्टाचार्य : बन्धुओं! मैं कोई भूमिका न बाँध कर सीधे-सीधे अपने विषय पर आती हूँ। आप सभी को पता है कि यदि हमें जल न मिले तो एक दिन भी काटना बड़ा मुश्किल होता है। आपको पता ही होगा कि पृथ्वी का जल-बजट सदा एक सा ही रहता है। जल अपनी अवस्था परिवर्तित कर सकता है। हो सकता है कि वह जल कभी बादलों में हो, हिम के रूप में हो या हमारे नलों में हो किन्तु पृथ्वी का जल-बजट कभी नहीं बदलता है।

आदर्श जी : जब जल-बजट एक सा रहता है, तब जल-संरक्षण की बात क्यों?

डॉ. भट्टाचार्य : जल-संकट के दो मुख्य कारण हैं-

पहला : औद्योगिक क्रियाकलापों के कारण भूजल प्रदूषित हो रहा है।

दूसरा : अब हर जगह पक्की जमीनें बन गई हैं। इस कारण वर्षा का जल रिस कर जमीन में संरक्षित नहीं हो पाता है। इस प्रकार वर्षा का अपार जल नालों, नहरों व नदियों के माध्यम से समुद्र में चला जाता है। जमीन में संरक्षित न होने के कारण हमारे लिए पानी की कमी हो जाती है। इसलिए भूजल संरक्षण अति आवश्यक है।

अध्यक्ष मिसेज तनेजा : इसके लिए हमें क्या करना होगा?

डॉ. भट्टाचार्य : जल-संरक्षण का सबसे सरल व सहज तरीका है कि वर्षा की बूँद जहाँ गिरे, उसे वहीं पर रोक कर संरक्षित कर लिया जाए तो पानी की कमी कभी नहीं होगी।

लक्ष्मी : बात तो आप ठीक कहती हैं। इसका उपाय क्या है?

डॉ. भट्टाचार्य : हर नई बनने वाली कालोनियों तथा कार्यालयों में जल-संरक्षण-प्लान्ट लगाना अनिवार्य हो। नई कालोनियों की संरचना इस प्रकार हो कि घर की छतें ढालू हों और छत से पाइप द्वारा समस्त वर्षा का जल धरती की गहराई में उतार दिया जाए। कालोनियों में कुछ स्थान कच्चा अवश्य हो, जिससे वर्षा जल संरक्षित हो सके। पुरानी कालोनियों में भी जल संरक्षण प्लान्ट लगें।

अब मैं केन्द्रीय भूमि जल बोर्ड के निदेशक श्री प्रद्युम्न श्रीवास्तव जी से अनुरोध करूँगी कि वह अपना वक्तव्य दें। (श्री प्रद्युम्न श्रीवास्तव जी माइक पर आते हैं।)

पक्की जमीन पर वर्षा का जल संरक्षित नहीं हो पाता है

प्रद्युम्न श्रीवास्तव : नमस्कार! मैडम भट्टाचार्य ने अभी बताया कि यदि वर्षा जल को जमीन में ठीक प्रकार से संरक्षित कर लिया जाए तो पानी की कोई कमी नहीं रहेगी। सत्य है-कारण कि पहले कच्ची जमीनें काफी होती थी। शहरीकरण के फलस्वरूप अब अधिकांशतः पक्की जमीनें बनने लगी हैं, जिसके कारण भूजल संरक्षण की समस्या उठ गई है। एक ओर तो उद्योग-धन्धे बढ़ने के कारण भूजल का दोहन अधिक हो रहा है, दूसरी ओर भूजल संरक्षित नहीं हो पा रहा है।

आदर्श जी : श्रीवास्तव जी! भूजल के अत्यधिक दोहन का एक कारण और भी है। पहले लोग कुएँ या हैण्डपम्प से पानी निकालते थे। अब या तो सरकारी सप्लाई होती है या लोग समर्सिबल पम्प द्वारा पानी निकालते हैं। इसलिए यदि नल टपकते भी रहते हैं तो वह पानी की कीमत नहीं समझते हैं।

प्रद्युम्न श्रीवास्तव : बिल्कुल ठीक कहा आपने! इसलिए जन-चेतना की वृहद् आवश्यकता है। जल संकट का दूसरा बड़ा कारण है प्रदूषित जल। यद्यपि जल में स्वयं शुद्धीकरण क्षमता होती है किन्तु जब जल में प्रदूषक भारी मात्रा में मिल जाते हैं, तब जल स्वयं को शुद्ध नहीं कर पाता है और प्रदूषित जल का नाम दे देते हैं। इस प्रकार पेयजल की कमी हो जाती है।

सुमन शर्मा : जल प्रदूषित न हो, इसका क्या उपाय है?

प्रद्युम्न श्रीवास्तव : घरों व कारखानों से निकलने वाले कचरे को स्त्रोत पर रोक लिया जाए और उसे शोधित करके पुनः चक्रित किया जाए। शोधन के उपरान्त उससे विद्युत व खाद बनाई जा सकती है।

आप लोग भी जल-प्रदूषण को रोकने के लिए कुछ उपाय बता सकते हैं।

संगीता : नदियों में पॉलिथिन न डालने दी जाए। लोग अपनी धार्मिक मान्यताओं के अनुसार नदी में फूल चढ़ाते हैं। साथ में लाई हुई पॉलिथिन भी नदी में ही डाल देते हैं। वैसे तो मैं सोचती हूँ कि पॉलिथिन के निर्माण पर ही रोक लगा दी जाए तो बहुत अच्छा है। (तालियाँ बजती हैं।)

सुनीता : मृत-मनुष्यों व मृत पशुओं के लिए शवदाह गृहों का निर्माण करवाया जाए। मीडिया द्वारा प्रचार किया जाए। यदि धार्मिक मान्यताओं के कारण मृत मनुष्यों के रिश्तेदार शवदाह-गृहों में ले जाने के लिए तैयार न भी हों तो कम से कम मृत पशुओं को तो अनिवार्य रूप से विद्युत-शवदाह-गृहों में ही ले जाया जाए।

प्रद्युम्न श्रीवास्तव : बहुत अच्छा! अन्य कोई सुझाव।

शची : नदियों में साबुन से नहाने तथा साबुन से कपड़े धोने की सख्त मनाही हो।

मिसेज तनेजा : खेतों में कीटनाशकों तथा रसायनों का प्रयोग कम से कम किया जाए। इससे एक ओर तो धरती की उर्वरा शक्ति में वृद्धि होगी और स्वास्थ्यवर्धक उपज भी प्राप्त होगी। दूसरी ओर भूमि जल भी प्रदूषित होने से बच सकेगा।

मिसेज भट्टाचार्य : सुन्दर, अतिसुन्दर! मि. श्रीवास्तव! केन्द्रीय भूमिजल बोर्ड ने भूमिजल पूनर्भरण के जो तरीके बताएँ हैं; उन पर भी प्रकाश डालें।

प्रद्युम्न श्रीवास्तव : शहरों व गाँवों में मकानों, फर्श, सड़कों आदि की संरचना अलग-अलग होती है। इसलिए दोनों के लिए भूजल-संचयन की अलग-अलग तकनीकें हैं।

रुची : शहरी क्षेत्रों के लिए भूजल पुनर्भरण की क्या तकनीकें हैं?

प्रद्युम्न श्रीवास्तव : पुनर्भरण गड्ढा (Recharge Pit)

पुनर्भरण खाई (Recharge Trench)

नलकूप (Tube Well)

पुनर्भरण कूप (Recharge Well) आदि। इनका विस्तृत वर्णन करना अभी सम्भव नहीं है।

रुचि : और ग्रामीण क्षेत्रों के लिए?

प्रद्युम्न श्रीवास्तव : ग्रामीण क्षेत्रों मे सामान्यतया सतही फैलाव की तकनीक अपनाई जाती है क्योंकि यहाँ जगह प्रचुरता से उपलब्ध होती है। ढलान, नदियों

तथा नालों के माध्यम से व्यर्थ जा रहे वर्षा जल को बचाने के लिए इन संरचनाओं का प्रयोग किया जा सकता है-

- गली प्लग (Gully Plug)
- परिरेखा बंध (Contour Bund)
- गैबियन संरचना (Gabion Structure)
- चेक बाँध (Check Dam)
- पुनर्भरण शाफ्ट (Recharge Shaft)
- कूप पुनर्भरण (Dugwell Recharge)
- भूमिगत जल बाँध (Ground Water Dam)
- नाला बंड
- उपसतही डाइक आदि

यह सारा विवरण आपको इन्टरनेट पर मिल जाएगा।

मिसेज भट्टाचार्य : (अपने स्थान पर ही खड़ी होकर) आप लोगों से निवेदन है कि जल संरक्षण के लिए जो भी नीति निर्दिष्ट की जा सके, उस पर अपने विचार देने की कृपा करें।

मिसेज तनेजा : बहनजी! कल महिला दिवस है। आज हमें सोचने का समय दें। कल हम लोग विचार-विमर्श करके एक पुख्ता योजना निकालने का प्रयास करेंगे।

मिसेज भट्टाचार्य : ठीक है, बहुत अच्छा।

पट परिवर्तन

(तीसरा दृश्य)

(राष्ट्रीय महिला आयोग का दृश्य है। अध्यक्ष मिसेज तनेजा, भूजल वैज्ञानिक मिसेज भट्टाचार्य तथा अन्य सदस्य कुर्सियों पर बैठी हैं।)

मिसेज तनेजा : सबको महिला दिवस की बधाई।

सभी लोग : आपको भी बधाई।

मिसेज तनेजा : पुरस्कार विरण समारोह तो शाम को होगा। आप लोग जल-संरक्षण के सम्बन्ध में अपने सुझावों से अवगत करवाने की कृपा करें।

शची : कल की गोष्ठी से मैंने दो मुख्य बातें ग्रहण की। पहली वर्षा जल की हर बूँद को संरक्षित किया जाए। दूसरी भूजल को प्रदूषित न होने दिया जाए।

मिसेज तनेजा : डॉ. भट्टाचार्य जी! आप भूजल संरक्षण के विषय में कुछ बताएँ।

डॉ. भट्टाचार्य : पहले तो यह समझ लें कि भूजल संचयन से कई लाभ हैं-भूजल में स्वतः शुद्धीकरण की क्षमता होती है। अतः यदि वर्षा जल में कुछ गन्दगी भी मिल जाती है तो भूमि के निचले स्तर पर जाने के बाद जल स्वतः शुद्ध हो जाता है।

धरती का जल स्तर न गिरने के कारण धरती फटने की समस्या भी नहीं रहती। बाढ़ व सूखे का खतरा भी कम होता है।

भूजल संचयन में न तो किसी टैंक की आवश्यकता है, न धरती के किसी हिस्से को घेरना पड़ता है, न ही इसमें मच्छर पनप सकते हैं, मिट्टी में नमी बनी रहती है, उपज अच्छी होती है और जब चाहे तब धरती से जल हैंडपम्प आदि के माध्यम से निकाल सकते हैं।

मिसेज तनेजा : बहुत अच्छा व सारगर्भित वक्तव्य दिया है। आप लोग बताएँ कि हम लोग कैसी कार्य योजना तैयार करें ताकि शुद्ध जल का संरक्षण हो सके।

लक्ष्मी : इसके लिए हमें दो रास्तों से काम करना होगा। पहला-हम माननीय सरकार को कुछ सुझाव दें। जैसे-

सभी घरों व कार्यालयों में वाटर मीटर लगाए जाएं। सभी कार्यालयों में वैसे नल लगे हों, जैसे रेल में लगे होते हैं। घरों व कारखानों से निकलने वाले कचरे को स्रोत पर ही रोक कर उसे पुनर्चक्रित किया जाए व पॉलिथिन के निर्माण पर ही नियंत्रण हो।

* दूसरा मार्ग है-वृहद जनचेतना।

मिसेज तनेजा : बहुत अच्छा लक्ष्मी जी! आपके पहले सुझाव के विषय में तो हम जल्दी ही कार्यान्वयन करेंगे। जल संरक्षण व जल-प्रदूषण-नियंत्रण के मुख्य बिन्दुओं को हम केन्द्रीय सरकार व राज्य सरकारों को भेजें।

* दूसरा सुझाव-जनचेतना कैसे फलाई जाए?

सुनीता जी : महिला आयोग के सभी राज्य कार्यालयों, क्षेत्रीय कार्यालयों व जिला कार्यालयों में हम जनचेतना सम्बन्धी कुछ प्रमुख बिन्दुओं को लिखकर भेजें व उनसे सुझाव व सहयोग माँगें।

मिसेज तनेजा : बहुत ठीक। प्रद्युम्न जी! आप कृपया उन बिन्दुओं की ओर इंगित करें, जिनसे जनचेतना फैलाई जा सके।

प्रद्युम्न श्रीवास्तव : जल संरक्षण समितियाँ गठित करके जनसंचार व गोष्ठियों के माध्यम से जनचेतना फैलाएं। कुछ प्रमुख बिन्दु हैं:

- जल संरक्षण बहुत बड़ा नैतिक व राष्ट्रीय कर्तव्य बताया जाए।
- नल की धार हमेशा धीमी रखें। दाल-चावल, सब्जी आदि बहते पानी में न धोकर बर्तन में धोयें। इस पानी को भी पेड़-पौधों में डालें।
- कपड़ों में अधिक डिटर्जेंट का प्रयोग न करें।
- नहाने में शावर का प्रयोग न करें।
- घर या बाहर कहीं भी नल टपकता देखें तो बन्द करें या ठीक करवायें।
- विद्यालयों में जल-संरक्षण के प्रति चेतना जगाई जाए।

कल या आज जिन बिन्दुओं पर चर्चा हो चुकी है, उनको मैं दोहरा नहीं रहा हूँ।

मिसेज तनेजा : आप लोगों का बहुत-बहुत धन्यवाद। आज का महिला दिवस सार्थक हुआ। हम इन सभी बिन्दुओं पर ध्यानाकर्षित करके कल से कार्य-योजना में परिणित करेंगे। हाँ! एक बात और गिलास में भी उतना ही पानी लें जितना पीना हो।

वाटर मीटर लगाने से जल की बर्बादी को कम किया जा सकता है

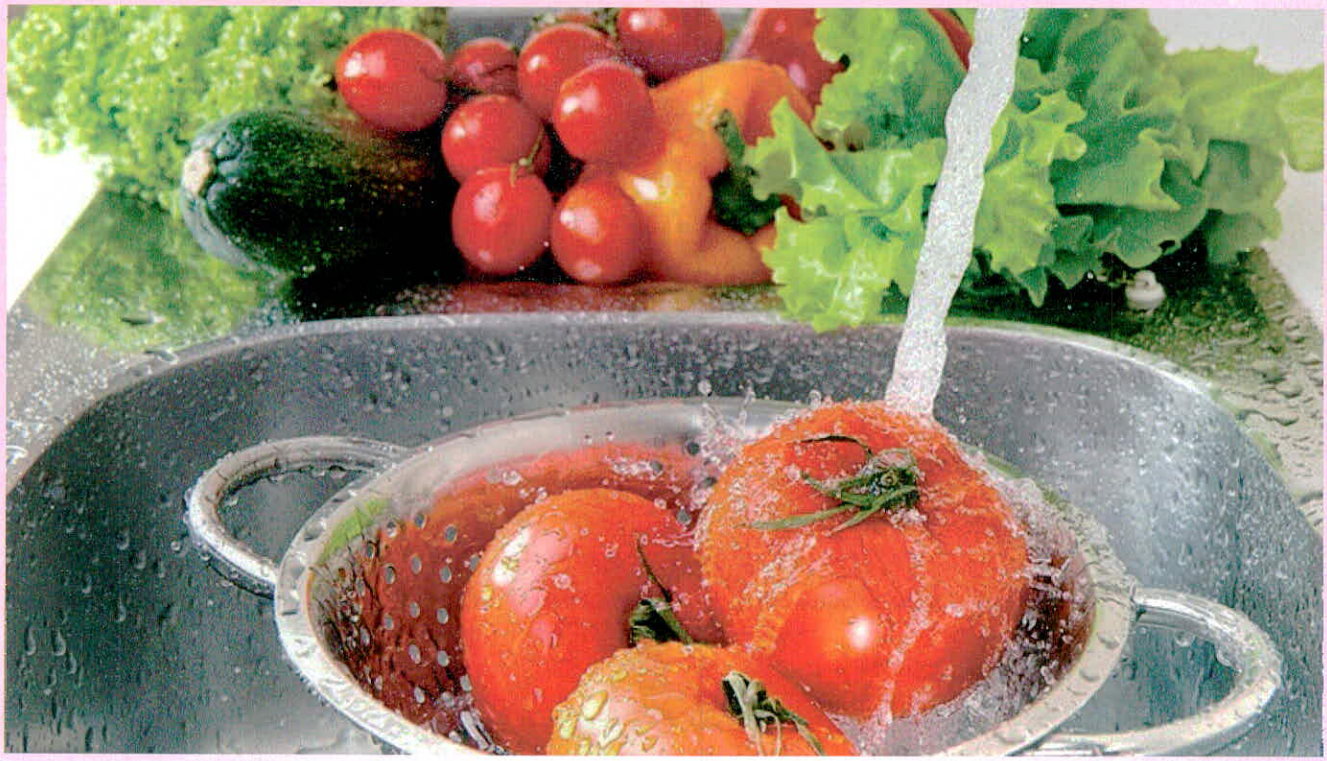

फल-सब्जी आदि बहते पानी में न धोये जायें

इससे एक ओर तो व्यर्थ पानी नहीं फैंका जाएगा, दूसरे हम दिन में कई बार पानी पीते हैं तब हर समय जल-चेतना बनी रहेगी।

डॉ. भट्टाचार्य : हाँ बहन जी! (गिलास उठाते हुए) पानी तो पी लूँ, बहुत प्यास लगी है। (सब हँसते हैं)

लक्ष्मी : हम सदा भरपूर पानी भी तभी पी सकेंगे, जब वर्षा जल की हर बूँद शुद्ध जल के रूप में संरक्षित हो सकेगी।

संपर्क करें:
डॉ. शोभा अग्रवाल 'चिलबिल'
आर्यमहिला आश्रम, न्यू राजेन्द्रनगर
नई दिल्ली-110060
मो.न. 9654135918, 9335924979
ई-मेलः chilbil.shubh@gmail.com